



कारकचिह्नानि

- प्रथमा— कर्ता (Nominative) **ने**
 - द्वितीया— कर्म (Accusative) **को**
 - तृतीया— करणम् (Instrumental) **ने/से/द्वारा**
 - चतुर्थी— सम्प्रदानम् (Dative) **के लिए**
 - पञ्चमी— अपादानम् (Ablative) **से (अलग)**
 - षष्ठी— सम्बन्धः (Genitive) **का की के**
 - सप्तमी— अधिकरणम् (Locative) **में/पर**
 - सम्बोधनम्— (Vocative) **हे/ओ/अरे/अये/भोः**
- ⇒ अनुक्ते कर्तरि तृतीया। उक्ते कर्तृकर्मादौ तु प्रथमैव भवति।

पुल्लिङ्गे अकारान्तेषु 'राम'शब्दस्य रूपाणि

| विभक्तिः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-----------|-----------|------------|------------|
| प्रथमा | रामः | रामौ | रामाः |
| सम्बोधनम् | हे राम ! | हे रामौ ! | हे रामाः ! |
| द्वितीया | रामम् | रामौ | रामान् |
| तृतीया | रामेण | रामाभ्याम् | रामैः |
| चतुर्थी | रामाय | रामाभ्याम् | रामेभ्यः |
| पञ्चमी | रामात्-द् | रामाभ्याम् | रामेभ्यः |
| षष्ठी | रामस्य | रामयोः | रामाणाम् |
| सप्तमी | रामे | रामयोः | रामेषु |

⇒ मयूरः, बालः, सूर्यः, प्रश्नः, पुत्रः, चन्द्रः, नृपः, खगः, धर्मः गजः इत्यादि अकारान्तपुल्लिङ्गशब्दसूची-१ मध्ये पठितानां रूपाणि रामवद्भवन्ति।

पुल्लिङ्गे इकारान्तेषु 'हरि'शब्दस्य रूपाणि

| विभक्तिः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-----------|---------|-----------|----------|
| प्रथमा | हरिः | हरी | हरयः |
| सम्बोधनम् | हे हरे | हे हरी | हे हरयः |
| द्वितीया | हरिम् | हरी | हरीन् |
| तृतीया | हरिणा | हरिभ्याम् | हरिभिः |
| चतुर्थी | हरये | हरिभ्याम् | हरिभ्यः |
| पञ्चमी | हरेः | हरिभ्याम् | हरिभ्यः |
| षष्ठी | हरेः | हर्योः | हरीणाम् |
| सप्तमी | हरौ | हर्योः | हरिषु |

⇒ कविः, मुनिः, विधिः, निधिः, गिरिः, अग्निः, ध्वनिः अतिथिः, सेनापतिः इत्यादि इकारान्तपुल्लिङ्गशब्दसूची-२ मध्ये पठितानां रूपाणि तथा तृतीया-चतुर्थी-पञ्चमी-षष्ठी-सप्तम्याः एकवचने— पत्या-पत्ये-पत्युः-पत्युः-पत्यौ एतानि रूपाणि विहाय तथा 'पति'शब्दस्य सर्वाण्यपि रूपाणि पुल्लिङ्गे 'हरि'वद्भवन्ति।

पुल्लिङ्गे उकारान्तेषु 'भानु'शब्दस्य रूपाणि

| विभक्तिः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-----------|---------|------------|----------|
| प्रथमा | भानुः | भानू | भानवः |
| सम्बोधनम् | हे भानो | हे भानू | हे भानवः |
| द्वितीया | भानुम् | भानू | भानून् |
| तृतीया | भानुना | भानुभ्याम् | भानुभिः |
| चतुर्थी | भानवे | भानुभ्याम् | भानुभ्यः |
| पञ्चमी | भानोः | भानुभ्याम् | भानुभ्यः |
| षष्ठी | भानोः | भान्वोः | भानूनाम् |
| सप्तमी | भानौ | भान्वोः | भानुषु |

⇒ शम्भुः, साधुः, तरुः, शत्रुः, वायुः, पशुः, प्रभुः, बिन्दुः, गुरुः, हेतुः इत्यादीनाम् उकारान्तपुल्लिङ्गशब्दसूची-३ मध्ये पठितानां रूपाणि 'भानु'वद्भवन्ति।

पुल्लिङ्गे ऋकारान्तेषु 'दातृ'शब्दस्य रूपाणि

| विभक्तिः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-----------|---------|------------|-----------|
| प्रथमा | दाता | दातारौ | दातारः |
| सम्बोधनम् | हे दातः | हे दातारौ | हे दातारः |
| द्वितीया | दातारम् | दातारौ | दातृन् |
| तृतीया | दात्रा | दातृभ्याम् | दातृभिः |
| चतुर्थी | दात्रे | दातृभ्याम् | दातृभ्यः |
| पञ्चमी | दातुः | दातृभ्याम् | दातृभ्यः |
| षष्ठी | दातुः | दात्रोः | दातृणाम् |
| सप्तमी | दातरि | दात्रोः | दातृषु |

⇒ कर्तृ, वक्तृ, जेतृ, द्रष्टृ, धातृ, श्रोतृ, स्रष्टृ, सवितृ इत्यादि ऋकारान्तपुल्लिङ्गशब्दसूची-४ मध्ये पठितानां रूपाणि तथा प्रथमाविभक्तेः द्वि-बहुवचनयोः द्वितीयाविभक्तेः एक-द्विवचनयोः— पितरौ- पितरः- पितरम्- पितरौ एतानि रूपाणि विहाय ऋकारान्तपुल्लिङ्गशब्दसूची-५ मध्ये पठितानां पित्रादिशब्दानां रूपाणि तथा द्वितीयाविभक्तेः बहुवचनं (मातृः)विहाय स्त्रीलिङ्ग-मातृशब्दस्यापि रूपाणि 'दातृ'वद्भवन्ति।

ओकारान्तेषु 'गो'शब्दस्य रूपाणि {पुल्लिङ्ग-स्त्रीलिङ्गे}

| विभक्तिः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-------------|---------|-----------|----------|
| प्र./सम्बो. | गौः | गावौ | गावः |
| द्वितीया | गाम् | गावौ | गाः |
| तृतीया | गवा | गोभ्याम् | गोभिः |
| चतुर्थी | गवे | गोभ्याम् | गोभ्यः |
| पञ्चमी | गोः | गोभ्याम् | गोभ्यः |
| षष्ठी | गोः | गवोः | गवाम् |
| सप्तमी | गवि | गवोः | गोषु |

स्त्रीलिङ्गे आकारान्तेषु 'लता'शब्दस्य रूपाणि

| विभक्तिः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-----------|---------|-----------|----------|
| प्रथमा | लता | लते | लताः |
| सम्बोधनम् | हे लते! | हे लते! | हे लताः! |
| द्वितीया | लताम् | लते | लताः |
| तृतीया | लतया | लताभ्याम् | लताभिः |
| चतुर्थी | लतायै | लताभ्याम् | लताभ्यः |
| पञ्चमी | लतायाः | लताभ्याम् | लताभ्यः |
| षष्ठी | लतायाः | लतयोः | लतानाम् |
| सप्तमी | लतायाम् | लतयोः | लतासु |

⇒ इत्थं रमा, उमा, पाठशाला, कथा, कन्या, गङ्गा, जनता, भाषा इत्यादीनाम् आकारान्तस्त्रीलिङ्गशब्दसूची-६ मध्ये पठितानां शब्दानां रूपाणि भवन्ति।

स्त्रीलिङ्गे ईकारान्तेषु 'नदी'शब्दस्य रूपाणि

| विभक्तिः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-----------|---------|-----------|----------|
| प्रथमा | नदी | नद्यौ | नद्यः |
| सम्बोधनम् | हे नदि | हे नद्यौ | हे नद्यः |
| द्वितीया | नदीम् | नद्यौ | नदीः |
| तृतीया | नद्या | नदीभ्याम् | नदीभिः |
| चतुर्थी | नद्यै | नदीभ्याम् | नदीभ्यः |
| पञ्चमी | नद्याः | नदीभ्याम् | नदीभ्यः |
| षष्ठी | नद्याः | नद्योः | नदीनाम् |
| सप्तमी | नद्याम् | नद्योः | नदीषु |

⇒ इत्थं गौरी, कुमारी, नारी, सखी, पुत्री, लक्ष्मीः, श्रीमती, नगरी इत्यादीनाम् ईकारान्तस्त्रीलिङ्गशब्दसूची-७ मध्ये

पठितानां शब्दानां रूपाणि भवन्ति।

⇒ तथा यकारस्य स्थाने वकारोच्चारणे कृते ऊकारान्तस्त्रीलिङ्गशब्दसूची-१० मध्ये पठितानां वधू-आदिशब्दानां (वधूः वध्वौ वध्वः) रूपाण्यपि 'नदी'वद्भवन्ति।

स्त्रीलिङ्गे इकारान्तेषु 'मति'शब्दस्य रूपाणि

| विभक्तिः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-----------|--------------|-----------|-----------|
| प्रथमा | मतिः | मती | मतयः |
| सम्बोधनम् | हे मते ! | हे मती ! | हे मतयः ! |
| द्वितीया | मतिम् | मती | मतीः |
| तृतीया | मत्या | मतिभ्याम् | मतिभिः |
| चतुर्थी | मत्यै, मतये | मतिभ्याम् | मतिभ्यः |
| पञ्चमी | मत्याः, मतेः | मतिभ्याम् | मतिभ्यः |
| षष्ठी | मत्याः, मतेः | मत्योः | मतीनाम् |
| सप्तमी | मत्याम्, मतौ | मत्योः | मतिषु |

⇒ इत्थं गतिः, श्रुतिः, भूमिः, ओषधिः, पङ्क्तिः, धूलिः, अङ्गुलिः, इत्यादीनाम् इकारान्तस्त्रीलिङ्गशब्दसूची-८ मध्ये पठितानां शब्दानां रूपाणि भवन्ति। इ-स्थाने उः य-स्थाने वकारोच्चारणे कृते उकारान्त-स्त्रीलिङ्गशब्दसूची-९ मध्ये पठितानां धेनु-इत्यादीनां शब्दानामपि रूपाणि 'मति'शब्दवद्भवन्ति।

स्त्रीलिङ्गे ईकारान्तेषु 'स्त्री'शब्दस्य रूपाणि

| विभक्तिः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-----------|---------------------|---------------|-------------------|
| प्रथमा | स्त्री | स्त्रियौ | स्त्रियः |
| सम्बोधनम् | हे स्त्रि ! | हे स्त्रियौ ! | हे स्त्रियः ! |
| द्वितीया | स्त्रियम्, स्त्रीम् | स्त्रियौ | स्त्रीः, स्त्रियः |
| तृतीया | स्त्रिया | स्त्रीभ्याम् | स्त्रीभिः |
| चतुर्थी | स्त्रियै | स्त्रीभ्याम् | स्त्रीभ्यः |
| पञ्चमी | स्त्रियाः | स्त्रीभ्याम् | स्त्रीभ्यः |
| षष्ठी | स्त्रियाः | स्त्रियोः | स्त्रीणाम् |
| सप्तमी | स्त्रियाम् | स्त्रियोः | स्त्रीषु |

नपुंसकलिङ्गे अकारान्तेषु 'फल'शब्दस्य रूपाणि

| विभक्तिः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|------------|---------|-----------|----------|
| प्र./द्वि. | फलम् | फले | फलानि |

शेष-रूपाणि रामवद्भवन्ति। अकारान्त-नपुंसकलिङ्ग-शब्दसूची-११ मध्ये पठितशब्दाः फलशब्दवद्बोद्धाः।

नपुंसकलिङ्गे ईकारान्तेषु 'सुधी'शब्दस्य रूपाणि

| प्र. | सुधि | सुधिनी | सुधीनि |
|--------|----------------|-----------------|-------------------|
| सम्बो. | हे सुधि/सुधे ! | हे सुधिनी ! | हे सुधीनि ! |
| द्वि. | सुधि | सुधिनी | सुधीनि |
| तृ. | सुधिया सुधिना | सुधिभ्याम् | सुधिभिः |
| च. | सुधिये सुधिने | सुधिभ्याम् | सुधिभ्यः |
| प. | सुधियः सुधिनः | सुधिभ्याम् | सुधिभ्यः |
| ष. | सुधियः सुधिनः | सुधियोः सुधिनोः | सुधियाम् सुधीनाम् |
| स. | सुधियि सुधिनि | सुधियोः सुधिनोः | सुधीषु |

⇒ तृतीया से सप्तमी विभक्ति तक पहले-२ रूप इ/उकारान्त-नपुंसकलिङ्ग-शब्दसूची-१२/१३ में पढ़े गये शब्दों के नहीं बनेंगे तथा शेष रूप 'सुधि' की तरह चलेंगे। किन्तु अस्थि, दधि, सक्थि, अक्षि इन ४ शब्दों के तृतीया से सप्तमी विभक्ति तक रूपों में इकार लोप होगा यथा— अक्ष्णा-अक्ष्णे-अक्ष्णः-२ अक्ष्णोः-२ तथा सप्तमी के एकवचन में इकारलोप विकल्प से होकर 'अक्षिण-अक्षणि' शेष रूप 'सुधी' की तरह होंगे।





पुल्लिङ्गे नकारान्तेषु 'राजन्' शब्दस्य रूपाणि

| विभक्तिः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-----------|---------------|-------------|-------------|
| प्रथमा | राजा | राजानौ | राजानः |
| सम्बोधनम् | हे राजन् ! | हे राजानौ ! | हे राजानः ! |
| द्वितीया | राजानम् | राजानौ | राज्ञः |
| तृतीया | राज्ञा | राजभ्याम् | राजभिः |
| चतुर्थी | राज्ञे | राजभ्याम् | राजभ्यः |
| पञ्चमी | राज्ञः | राजभ्याम् | राजभ्यः |
| षष्ठी | राज्ञः | राज्ञोः | राज्ञाम् |
| सप्तमी | राज्ञि, राजनि | राज्ञोः | राजसु |

⇒ प्रेमन् (अयं नपुंसकेऽपि), भूमन्, गरिमन्, अश्वत्थामन्, अणिमन्, इत्यादि नकारान्तपुल्लिङ्गशब्दसूची-१ मध्ये पठितानां 'इमनिच्'प्रत्ययान्तशब्दानां रूपाणि अनः अकारलोपं कृत्वा 'राजन्'वद् भवन्ति।

पुल्लिङ्गे नकारान्तेषु 'आत्मन्' शब्दस्य रूपाणि

| विभक्तिः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-----------|-------------|--------------|--------------|
| प्रथमा | आत्मा | आत्मानौ | आत्मानः |
| सम्बोधनम् | हे आत्मन् ! | हे आत्मानौ ! | हे आत्मानः ! |
| द्वितीया | आत्मानम् | आत्मानौ | आत्मानः |
| तृतीया | आत्मना | आत्मभ्याम् | आत्मभिः |
| चतुर्थी | आत्मने | आत्मभ्याम् | आत्मभ्यः |
| पञ्चमी | आत्मनः | आत्मभ्याम् | आत्मभ्यः |
| षष्ठी | आत्मनः | आत्मनोः | आत्मनाम् |
| सप्तमी | आत्मनि | आत्मनोः | आत्मसु |

⇒ यज्वन्, ब्रह्मन्, ब्रह्मन्, मातरिश्वन्, अध्वन्, इत्यादि वकारान्त-मकारान्त-संयोगशब्दानां रूपाणि अनः अकारलोपम् अकृत्वा 'आत्मन्'वद् भवन्ति। श्वन् एवं युवन् शब्दयोः रूपाण्यपि 'आत्मन्'वद् भवन्ति केवलं द्वितीयाबहुवचनतः श्वन् स्थाने 'शुन्' तथा युवन् स्थाने 'यून्' इत्युच्चारणम् अजादिषु विभक्तिषु करणीयम्।

पुल्लिङ्गे नकारान्तेषु 'योगिन्' शब्दस्य रूपाणि

| विभक्तिः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-----------|-------------|-------------|-------------|
| प्रथमा | योगी | योगिनौ | योगिनः |
| सम्बोधनम् | हे योगिन् ! | हे योगिनौ ! | हे योगिनः ! |
| द्वितीया | योगिनम् | योगिनौ | योगिनः |
| तृतीया | योगिना | योगिभ्याम् | योगिभिः |
| चतुर्थी | योगिने | योगिभ्याम् | योगिभ्यः |
| पञ्चमी | योगिनः | योगिभ्याम् | योगिभ्यः |
| षष्ठी | योगिनः | योगिनोः | योगिनाम् |
| सप्तमी | योगिनि | योगिनोः | योगिषु |

⇒ इत्थं नकारान्तपुल्लिङ्गशब्दसूची-२ मध्ये पठितानां करिन्, दण्डिन्, धनिन् इत्यादिशब्दानां रूपाणि भवन्ति।

पुल्लिङ्गे नकारान्तेषु 'पथिन्' शब्दस्य रूपाणि

| प्र./सम्बो. | पन्थाः | पन्थानौ | पन्थानः |
|-------------|----------|-------------|-----------|
| द्वितीया | पन्थानम् | पन्थानौ | पन्थानः |
| तृतीया | पन्था | पन्थिभ्याम् | पन्थिभिः |
| चतुर्थी | पन्थे | पन्थिभ्याम् | पन्थिभ्यः |
| पञ्चमी | पन्थः | पन्थिभ्याम् | पन्थिभ्यः |
| षष्ठी | पन्थः | पन्थोः | पन्थाम् |
| सप्तमी | पन्थि | पन्थोः | पन्थिषु |

पुल्लिङ्गे तकारान्तेषु 'भगवत्' शब्दस्य रूपाणि

| विभक्तिः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-----------|------------|--------------|--------------|
| प्रथमा | भगवान् | भगवन्तौ | भगवन्तः |
| सम्बोधनम् | हे भगवन् ! | हे भगवन्तौ ! | हे भगवन्तः ! |
| द्वितीया | भगवन्तम् | भगवन्तौ | भगवतः |
| तृतीया | भगवता | भगवद्भ्याम् | भगवद्भिः |
| चतुर्थी | भगवते | भगवद्भ्याम् | भगवद्भ्यः |
| पञ्चमी | भगवतः | भगवद्भ्याम् | भगवद्भ्यः |
| षष्ठी | भगवतः | भगवतोः | भगवताम् |
| सप्तमी | भगवति | भगवतोः | भगवत्सु |

⇒ एवमेव तकारान्तपुल्लिङ्गशब्दसूची-३ मध्ये पठितानां श्रीमत्, धीमत्, बलवत्, इत्यादीनां रूपाणि भवन्ति। महान्, महान्तौ, महान्तः। हे महन्। महान्तम्, महान्तौ इन ६ रूपों को छोड़कर 'महत्'शब्द के रूप भी 'भगवत्' शब्द की तरह बनेंगे। प्रथमैकवचने उपधादीर्घम् अकृत्वा तकारान्तपुल्लिङ्गशब्दसूची-४ मध्ये पठितानां पठत् गच्छत्, धावत् इत्यादीनां रूपाण्यपि 'भगवत्' इव भवन्ति।

पुल्लिङ्गे सकारान्तेषु 'चन्द्रमस्' शब्दस्य रूपाणि

| विभक्तिः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-----------|---------------|----------------|-----------------|
| प्रथमा | चन्द्रमाः | चन्द्रमसौ | चन्द्रमसः |
| सम्बोधनम् | हे चन्द्रमः ! | हे चन्द्रमसौ ! | हे चन्द्रमसः ! |
| द्वितीया | चन्द्रमसम् | चन्द्रमसौ | चन्द्रमसः |
| तृतीया | चन्द्रमसा | चन्द्रमोभ्याम् | चन्द्रमोभिः |
| चतुर्थी | चन्द्रमसे | चन्द्रमोभ्याम् | चन्द्रमोभ्यः |
| पञ्चमी | चन्द्रमसः | चन्द्रमोभ्याम् | चन्द्रमोभ्यः |
| षष्ठी | चन्द्रमसः | चन्द्रमसोः | चन्द्रमसाम् |
| सप्तमी | चन्द्रमसि | चन्द्रमसोः | चन्द्रमःसु-स्सु |

⇒ इत्थं वेधस्, दुर्वासस् इत्यादिशब्दानां रूपाणि भवन्ति।

स्त्रीलिङ्गे तकारान्तेषु 'योषित्' शब्दस्य रूपाणि

| विभक्तिः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-----------|----------------|--------------|-------------|
| प्रथमा | योषित्-द् | योषितौ | योषितः |
| सम्बोधनम् | हे योषित्-द् ! | हे योषितौ ! | हे योषितः ! |
| द्वितीया | योषितम् | योषितौ | योषितः |
| तृतीया | योषिता | योषिद्भ्याम् | योषिद्भिः |
| चतुर्थी | योषिते | योषिद्भ्याम् | योषिद्भ्यः |
| पञ्चमी | योषितः | योषिद्भ्याम् | योषिद्भ्यः |
| षष्ठी | योषितः | योषितोः | योषिताम् |
| सप्तमी | योषिति | योषितोः | योषित्सु |

⇒ इत्थं सम्पद्, शरद्, परिषद्, सरित्, हरित्, तडित्, इत्यादीनाम् द/तकारान्तस्त्रीलिङ्गशब्दसूची-५ मध्ये पठितानां शब्दानां रूपाणि भवन्ति।

स्त्रीलिङ्गे चकारान्तेषु 'वाच्' शब्दस्य रूपाणि

| प्रथमा | वाक्-ग् | वाचौ | वाचः |
|-----------|--------------|------------|-----------|
| सम्बोधनम् | हे वाक्-ग् ! | हे वाचौ ! | हे वाचः ! |
| द्वितीया | वाचम् | वाचौ | वाचः |
| तृतीया | वाचा | वाग्भ्याम् | वाग्भिः |
| चतुर्थी | वाचे | वाग्भ्याम् | वाग्भ्यः |
| पञ्चमी | वाचः | वाग्भ्याम् | वाग्भ्यः |
| षष्ठी | वाचः | वाचोः | वाचाम् |
| सप्तमी | वाचि | वाचोः | वाक्षु |

⇒ इत्थं शुच्, त्वच्, स्रज्, रुज्, दिश्, दृश् इत्यादीनाम् च/ज/ शकारान्तस्त्रीलिङ्गशब्दसूची-६ मध्ये पठितानां शब्दानां रूपाणि भवन्ति।

स्त्रीलिङ्गे षकारान्तेषु 'आशिष्' शब्दस्य रूपाणि

| विभक्तिः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-----------|-----------|-------------|-------------|
| प्रथमा | आशीः | आशिषौ | आशिषः |
| सम्बोधनम् | हे आशीः ! | हे आशिषौ ! | हे आशिषः ! |
| द्वितीया | आशिषम् | आशिषौ | आशिषः |
| तृतीया | आशिषा | आशीर्भ्याम् | आशीर्भिः |
| चतुर्थी | आशिषे | आशीर्भ्याम् | आशीर्भ्यः |
| पञ्चमी | आशिषः | आशीर्भ्याम् | आशीर्भ्यः |
| षष्ठी | आशिषः | आशिषोः | आशिषाम् |
| सप्तमी | आशिषि | आशिषोः | आशीःषु-ष्षु |

⇒ इत्थं गिर्, पुर् इत्यादीनां शब्दानां रूपाणि भवन्ति।

नपुंसकलिङ्गे नकारान्तेषु 'नामन्' शब्दस्य रूपाणि

| विभक्तिः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-----------|--------------|-----------------|-------------|
| प्रथमा | नाम | नाम्नी-नामनी | नामानि |
| सम्बोधनम् | हे नाम ! | हे नाम्नी-नामनी | हे नामानि ! |
| द्वितीया | नाम | नाम्नी-नामनी | नामानि |
| तृतीया | नाम्ना | नामभ्याम् | नामभिः |
| चतुर्थी | नाम्ने | नामभ्याम् | नामभ्यः |
| पञ्चमी | नाम्नः | नामभ्याम् | नामभ्यः |
| षष्ठी | नाम्नः | नाम्नोः | नाम्नाम् |
| सप्तमी | नाम्नि नामनि | नाम्नोः | नामसु |

⇒ इत्थं दामन्, प्रेमन् इत्यादीनां शब्दानां रूपाणि भवन्ति। ब्रह्मन्, शर्मन् इत्यादीनां शब्दानां रूपाणि प्रथमा-द्वितीयायां 'नामन्'वत् तथा शेषरूपाणि 'आत्मन्'वद्भवन्ति।

नपुंसकलिङ्गे सकारान्तेषु 'मनस्' शब्दस्य रूपाणि

| विभक्तिः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-----------|----------|-----------|-------------|
| प्रथमा | मनः | मनसी | मनांसि |
| सम्बोधनम् | हे मनः ! | हे मनसी ! | हे मनांसि ! |
| द्वितीया | मनः | मनसी | मनांसि |
| तृतीया | मनसा | मनोभ्याम् | मनोभिः |
| चतुर्थी | मनसे | मनोभ्याम् | मनोभ्यः |
| पञ्चमी | मनसः | मनोभ्याम् | मनोभ्यः |
| षष्ठी | मनसः | मनसोः | मनसाम् |
| सप्तमी | मनसि | मनसोः | मनःसु-स्सु |

⇒ इत्थं सकारान्तनपुंसकलिङ्गशब्दसूची-७ तमस्, तेजस्, शिरस् इत्यादीनां रूपाणि भवन्ति। प्रथमाद्वितीययोः बहुवचनं (अहानि) विहाय 'अहन्'शब्दस्यापि रूपाणि प्रायः 'मनस्'वद्भवन्ति।

नपुंसकलिङ्गे तकारान्तेषु 'जगत्' शब्दस्य रूपाणि

| प्र./द्वि./सं. | जगत् जगद् | जगती | जगन्ति |
|----------------|--|------|--------|
| शेषरूपाणि | 'भगवत्'शब्दवद् भवन्ति। एवमेव द/तकारान्त-नपुंसकलिङ्ग-शब्दसूची-८ मध्ये पठितशब्दाः बोध्याः। | | |

नपुंसकलिङ्गे षकारान्तेषु 'चक्षुष्' शब्दस्य रूपाणि

| प्र./द्वि./सं. | चक्षुः | चक्षुषी | चक्षुंषि |
|------------------|---|---------|----------|
| शेषरूपाणि प्रायः | (चक्षुर्भ्याम्) 'आशिष्'शब्दवद् भवन्ति। एवमेव धनुष्, वपुष्, हविष्, आयुष् षकारान्त-नपुंसकलिङ्ग-शब्दसूची-९ मध्ये पठितशब्दानां रूपाणि बोध्यानि। | | |



संस्कृतसम्भाषणस्य द्वितीयसोपानम् (सर्वनाम-सङ्ख्यारूपकण्ठस्थीकरणम्-३)

त्रिषु लिङ्गेषु सरूपस्य 'युष्मद्= तुम्' शब्दस्य रूपाणि

| विभक्तिः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|----------|--------------|------------------|----------------|
| प्रथमा | त्वम् | युवाम् | यूयम् |
| द्वितीया | त्वाम्, त्वा | युवाम्, वाम् | युष्मान्, वः |
| तृतीया | त्वया | युवाभ्याम् | युष्माभिः |
| चतुर्थी | तुभ्यम्, ते | युवाभ्याम्, वाम् | युष्मभ्यम्, वः |
| पञ्चमी | त्वत् | युवाभ्याम् | युष्मत् |
| षष्ठी | तव, ते | युवयोः, वाम् | युष्माकम्, वः |
| सप्तमी | त्वयि | युवयोः | युष्मासु |

त्रिषु लिङ्गेषु सरूपस्य 'अस्मद्= मैं' शब्दस्य रूपाणि

| विभक्तिः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|----------|------------|---------------|---------------|
| प्रथमा | अहम् | आवाम् | वयम् |
| द्वितीया | माम्, मा | आवाम्, नौ | अस्मान्, नः |
| तृतीया | मया | आवाभ्याम् | अस्माभिः |
| चतुर्थी | मह्यम्, मे | आवाभ्याम्, नौ | अस्मभ्यम्, नः |
| पञ्चमी | मत् | आवाभ्याम् | अस्मत् |
| षष्ठी | मम, मे | आवयोः, नौ | अस्माकम्, नः |
| सप्तमी | मयि | आवयोः | अस्मासु |

- पुल्लिङ्ग में भवत्= आप शब्द के रूप (भवान् भवन्तौ भवन्तः) 'भगवत्' शब्द की तरह चलेंगे।
- स्त्रीलिङ्ग में भवती= आप शब्द के रूप (भवती भवत्यौ भवत्यः) 'नदी' शब्द की तरह चलेंगे।
- नपुंसकलिङ्ग में भवत्= आप शब्द के रूप (भवत्-द्वं भवती भवन्ति) 'जगत्' शब्द की तरह चलेंगे।

पुल्लिङ्ग 'एतद्= अतिसमीप (यह)' शब्दस्य रूपाणि

| विभक्तिः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|----------|-------------|--------------|--------------|
| प्रथमा | एषः | एतौ | एते |
| द्वितीया | एतम्, एनम् | एतौ, एनौ | एतान्, एनान् |
| तृतीया | एतेन, एनेन | एताभ्याम् | एतैः |
| चतुर्थी | एतस्मै | एताभ्याम् | एतेभ्यः |
| पञ्चमी | एतस्मात्-द् | एताभ्याम् | एतेभ्यः |
| षष्ठी | एतस्य | एतयोः, एनयोः | एतेषाम् |
| सप्तमी | एतस्मिन् | एतयोः, एनयोः | एतेषु |

स्त्रीलिङ्ग 'एतद्= अतिसमीप (यह)' शब्दस्य रूपाणि

| प्रथमा | एषा | एते | एताः |
|----------|--------------|--------------|------------|
| द्वितीया | एताम्, एनाम् | एते, एने | एताः, एनाः |
| तृतीया | एतया, एनया | एताभ्याम् | एताभिः |
| चतुर्थी | एतस्यै | एताभ्याम् | एताभ्यः |
| पञ्चमी | एतस्याः | एताभ्याम् | एताभ्यः |
| षष्ठी | एतस्याः | एतयोः, एनयोः | एतासाम् |
| सप्तमी | एतस्याम् | एतयोः, एनयोः | एतासु |

नपुंसकलिङ्ग 'एतद्= अतिसमीप (यह)' शब्द के रूप

| प्र./ द्वि. | एतत्, एतद् | एते | एतानि |
|--|------------|-----|-------|
| शेषरूपाणि पुल्लिङ्गस्य 'एतद्'वद् भवन्ति। | | | |

- पुल्लिङ्ग में यद्= जो (यः यौ ये), तद्= वह परोक्ष (सः तौ ते), किम्= कौन/क्या (कः कौ के), सर्व विश्व सम सिम= सब (सर्वः सर्वौ सर्वे इत्यादि), अन्य = दूसरा (अन्यः अन्यौ अन्ये), अन्यतम= बहुतों में से एक, अन्यतर= दो में से एक (अन्यतरः अन्यतरौ अन्यतरे), इतर= भिन्न (इतरः इतरौ इतरे) शब्दों के रूप अन्वादेश वाले द्वितीय रूपों को छोड़कर 'एतद्= एषः' शब्द की तरह चलेंगे। इनके सम्बोधन नहीं होता।

- स्त्रीलिङ्ग में यद् (या) = जो (या ये याः), तद् (सा) = वह परोक्ष (सा ते ताः), किम् (का) = कौन/क्या (का के काः), सर्वा विश्वा समा सिमा= सब (सर्वा सर्वे सर्वाः इत्यादि), अन्या = दूसरा (अन्या अन्ये अन्याः), अन्यतमा= बहुतों में से एक, अन्यतरा= दो में से एक (अन्यतरा अन्यतरे अन्यतराः), इतरा= भिन्न (इतरा इतरे इतराः) शब्दों के रूप अन्वादेश वाले द्वितीय रूपों को छोड़कर 'एतद्= एषा' शब्द की तरह चलेंगे।

- नपुंसकलिङ्ग में यद्= जो (यत् ये यानि), तद्= वह परोक्ष (तत् ते तानि), किम्= कौन/क्या (किम् के कानि), सर्व विश्व सम सिम= सब (सर्वम् सर्वे सर्वाणि इत्यादि), अन्य = दूसरा (अन्यत् अन्ये अन्यानि), अन्यतम= बहुतों में से एक, अन्यतर= दो में से एक (अन्यतरत् अन्यतरे अन्यतराणि), इतर= भिन्न (इतरत् इतरे इतराणि) शब्दों के रूप अन्वादेश वाले द्वितीय रूपों को छोड़कर 'एतद्' शब्द की तरह चलेंगे।

पुल्लिङ्ग 'पूर्वः= प्रथमः, दिशा' शब्दस्य रूपाणि

| वि. | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|--------|-----------------------|--------------|----------------------|
| प्र. | पूर्वः | पूर्वौ | पूर्वे, पूर्वाः |
| सम्बो. | हे पूर्व ! | हे पूर्वौ ! | हे पूर्वे, पूर्वाः ! |
| द्वि. | पूर्वम् | पूर्वौ | पूर्वान् |
| तृ. | पूर्वेण | पूर्वाभ्याम् | पूर्वैः |
| च. | पूर्वस्मै | पूर्वाभ्याम् | पूर्वेभ्यः |
| प. | पूर्वस्मात्, पूर्वात् | पूर्वाभ्याम् | पूर्वेभ्यः |
| ष. | पूर्वस्य | पूर्वयोः | पूर्वेषाम् |
| स. | पूर्वस्मिन्, पूर्वे | पूर्वयोः | पूर्वेषु |

- इसी प्रकार पर = दूसरा, अवर= कम, दक्षिण = दाहिना, उत्तर= अगला, अपर = दूसरा, अधर= नीचा, इन शब्दों का दिशा देश तथा काल अर्थ भी होता है। स्व= स्वयं/ अपने, अन्तर= बाह्य/परिधानीय, इन शब्दों के भी रूप जानने चाहिए।

- नपुंसकलिङ्ग में तथा प्रथमा द्वितीया विभक्ति के 'पूर्व पूर्व पूर्वाणि' इत्यादि रूपों को छोड़कर पूर्वपरादि नौ शब्दों के शेष रूप पुल्लिङ्ग 'पूर्व' शब्द की तरह ही होंगे।

- स्त्रीलिङ्ग में पूर्वा परा, अवरा, दक्षिणा, उत्तरा, अपरा, अधरा, स्वा, अन्तरा शब्दों के रूप 'एषा' की तरह होंगे।

पुल्लिङ्ग 'इदम्= समीप (यह)' शब्दस्य रूपाणि

| प्र. | अयम् | इमौ | इमे |
|-------|------------|--------------|--------------|
| द्वि. | इमम्, एनम् | इमौ, एनौ | इमान्, एनान् |
| तृ. | अनेन, एनेन | आभ्याम् | एभिः |
| च. | अस्मै | आभ्याम् | एभ्यः |
| प. | अस्मात्-द् | आभ्याम् | एभ्यः |
| ष. | अस्य | अनयोः, एनयोः | एषाम् |
| स. | अस्मिन् | अनयोः, एनयोः | एषु |

स्त्रीलिङ्ग 'इदम्= समीप (यह)' शब्दस्य रूपाणि

| प्र. | इयम् | इमे | इमाः |
|-------|--------------|--------------|------------|
| द्वि. | इमाम्, एनाम् | इमे, एने | इमाः, एनाः |
| तृ. | अनया, एनया | आभ्याम् | आभिः |
| च. | अस्यै | आभ्याम् | आभ्यः |
| प. | अस्याः | आभ्याम् | आभ्यः |
| ष. | अस्याः | अनयोः, एनयोः | आसाम् |
| स. | अस्याम् | अनयोः, एनयोः | आसु |

नपुंसकलिङ्ग 'इदम्= समीप (यह)' शब्दस्य रूपाणि

| प्र. | इदम् | इमे | इमानि |
|-------------------|------------|----------|--------------|
| द्वि. | इदम्, एनम् | इमे, एने | इमानि, एनानि |
| शेष पुल्लिङ्गवत्। | | | |

पुल्लिङ्ग 'अदस्= वह (दूर)' शब्दस्य रूपाणि

| प्रथमा | असौ | अमू | अमी |
|----------|--------------|-----------|---------|
| द्वितीया | अमुम् | अमू | अमून् |
| तृतीया | अमुना | अमूभ्याम् | अमीभिः |
| चतुर्थी | अमुष्मै | अमूभ्याम् | अमीभ्यः |
| पञ्चमी | अमुष्मात्-द् | अमूभ्याम् | अमीभ्यः |
| षष्ठी | अमुष्य | अमुयोः | अमीषाम् |
| सप्तमी | अमुष्मिन् | अमुयोः | अमीषु |

नपुंसकलिङ्ग 'अदस्= वह (दूर)' शब्दस्य रूपाणि

| प्र./ द्वि. | अदः | अमू | अमूनि |
|---|-----|-----|-------|
| शेष रूपाणि पुल्लिङ्गवद् भवन्ति। त्यदादीनां सम्बोधनं नास्ति। | | | |

स्त्रीलिङ्ग 'अदस्= वह (दूर)' शब्दस्य रूपाणि

| प्रथमा | असौ | अमू | अमूः |
|----------|-----------|-----------|---------|
| द्वितीया | अमुम् | अमू | अमूः |
| तृतीया | अमुया | अमूभ्याम् | अमूभिः |
| चतुर्थी | अमुष्यै | अमूभ्याम् | अमूभ्यः |
| पञ्चमी | अमुष्याः | अमूभ्याम् | अमूभ्यः |
| षष्ठी | अमुष्याः | अमुयोः | अमूषाम् |
| सप्तमी | अमुष्याम् | अमुयोः | अमूषु |

एकशब्दः एकवचनान्तः तस्य त्रिषु लिङ्गेषु रूपाणि

| विभक्तिः | पुल्लिङ्गम् | स्त्रीलिङ्गम् | नपुंसकलिङ्गम् |
|----------|-------------|---------------|---------------|
| प्रथमा | एकः | एका | एकम् |
| द्वितीया | एकम् | एकाम् | एकम् |
| तृतीया | एकेन | एकया | एकेन |
| चतुर्थी | एकस्मै | एकस्यै | एकस्मै |
| पञ्चमी | एकस्मात्-द् | एकस्याः | एकस्मात्-द् |
| षष्ठी | एकस्य | एकस्याः | एकस्य |
| सप्तमी | एकस्मिन् | एकस्याम् | एकस्मिन् |

द्विशब्दः द्विवचनान्तः तस्य त्रिषु लिङ्गेषु रूपाणि

| पु. | द्वौ | द्वौ | द्वाभ्याम् | द्वाभ्याम् | द्वाभ्याम् | द्वयोः | द्वयोः |
|----------------|------|------|------------|------------|------------|--------|--------|
| स्त्री./ नपुं. | द्वे | द्वे | द्वाभ्याम् | द्वाभ्याम् | द्वाभ्याम् | द्वयोः | द्वयोः |

त्रिशब्दः बहुवचनान्तः तस्य त्रिषु लिङ्गेषु रूपाणि

| पु. | त्रयः | त्रीन् | त्रिभिः | त्रिभ्यः | त्रिभ्यः | त्रयाणाम् | त्रिषु |
|---------|--------|--------|---------|----------|----------|-----------|--------|
| स्त्री. | तिस्रः | तिस्रः | तिसृभिः | तिसृभ्यः | तिसृभ्यः | तिसृणाम् | तिसृषु |
| नपुं. | त्रीणि | त्रीणि | त्रिभिः | त्रिभ्यः | त्रिभ्यः | त्रयाणाम् | त्रिषु |

'चतुर्' शब्दः बहुवचनान्तः तस्य त्रिषु लिङ्गेषु रूपाणि

| विभक्तिः | पुल्लिङ्गम् | स्त्रीलिङ्गम् | नपुंसकलिङ्गम् |
|----------|-------------|---------------|---------------|
| प्रथमा | चत्वारः | चतस्रः | चत्वारि |
| द्वितीया | चतुरः | चतस्रः | चत्वारि |
| तृतीया | चतुर्भिः | चतसृभिः | चतुर्भिः |
| चतुर्थी | चतुर्भ्यः | चतसृभ्यः | चतुर्भ्यः |
| पञ्चमी | चतुर्भ्यः | चतसृभ्यः | चतुर्भ्यः |
| षष्ठी | चतुर्णाम् | चतसृणाम् | चतुर्णाम् |
| सप्तमी | चतुर्षु | चतसृषु | चतुर्षु |

बहुवचनान्त 'पञ्च' शब्दस्य त्रिलिङ्गरूपाणि। एवं सप्त नव दश

| पञ्च | पञ्च | पञ्चभिः | पञ्चभ्यः | पञ्चभ्यः | पञ्चानाम् | पञ्चसु |
|--------|--------|----------|-----------|-----------|-----------|---------|
| षट्-ड् | षट्-ड् | षड्भिः | षड्भ्यः | षड्भ्यः | षण्णाम् | षट्सु |
| अष्टौ | अष्टौ | अष्टाभिः | अष्टाभ्यः | अष्टाभ्यः | अष्टानाम् | अष्टासु |
| | अष्ट | अष्टभिः | अष्टभ्यः | अष्टभ्यः | अष्टानाम् | अष्टसु |